

रविवार 26 जनवरी, 2020

विषय — सत्य

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 86 : 11

“हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा।”

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 100 : 1-5

- 1 हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
- 2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!
- 3 निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं॥
- 4 उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!
- 5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 32 : 1-4

- 1 हे आकाश, कान लगा, कि मैं बोलूँ; और हे पृथ्वी, मेरे मुँह की बातें सुन॥
- 2 मेरा उपदेश मेँह की नाई बरसेगा और मेरी बातें ओस की नाई टपकेंगी, जैसे कि हरी घास पर झीसी, और पौधों पर झडियाँ॥
- 3 मैं तो यहोवा नाम का प्रचार करूँगा। तुम अपने परमेश्वर की महिमा को मानो!

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 4 वह चट्टान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उस में कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है॥

2. दानियेल 3 : 1, 8, 10-13 (से 1st .), 14 (से 1st .), 15 (गिर कर) (से ;), 15 (परंतु), 16 (से 4th .), 17, 18, 21, 24-26, 28, 29

- 1 नबूकदनेस्सर राजा ने सोने की एक मूरत बनवाई, जिनकी ऊंचाई साठ हाथ, और चौड़ाई छः हाथ की थी। और उसने उसको बाबुल के प्रान्त के दूरा नाम मैदान में खड़ा कराया।
- 8 उसी समय कई एक कसदी पुरुष राजा के पास गए, और कपट से यहूदियों की चुगली खाई।
- 10 हे राजा, तू ने तो यह आज्ञा दी है कि जो मनुष्य नरसिंगे, बांसुली, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि सब प्रकार के बाजों का शब्द सुने, वह गिर कर उस सोने की मूरत को दण्डवत करे;
- 11 और जो कोई गिर कर दण्डवत न करे वह धधकते हुए भट्टे के बीच में डाल दिया जाए।
- 12 देख, शद्रक, मेशक, और अबेदनगो नाम कुछ यहूदी पुरुष हैं, जिन्हें तू ने बाबुल के प्रान्त के कार्य के ऊपर नियुक्त किया है। उन पुरुषों ने, हे राजा, तेरी आज्ञा की कुछ चिन्ता नहीं की; वे तेरे देवता की उपासना नहीं करते, और जो सोने की मूरत तू ने खड़ी कराई है, उसको दण्डवत नहीं करते॥
- 13 तब नबूकदनेस्सर ने रोष और जलजलाहट में आकर आज्ञा दी कि शद्रक मेशक और अबेदनगो को लाओ।
- 14 नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा।
- 15 ... गिर कर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत करो... और यदि तुम दण्डवत ने करो तो इसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जाओगे; फिर ऐसा कौन देवता है, जो तुम को मेरे हाथ से छुड़ा सके?
- 16 शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने राजा से कहा।
- 17 हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्टे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।
- 18 परन्तु, यदि नहीं, तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे॥
- 21 तब वे पुरुष अपने मोर्जों, अंगरखों, बागों और और वस्त्रों सहित बान्धकर, उस धधकते हुए भट्टे में डाल दिए गए।
- 24 तब नबूकदनेस्सरे राजा अचम्भित हुआ और घबरा कर उठ खड़ा हुआ। और अपने मन्त्रियों से पूछने लगा, क्या हम ने उस आग के बीच तीन ही पुरुष बन्धे हुए नहीं डलवाए? उन्होंने राजा को उत्तर दिया, हां राजा, सच बात तो है।
- 25 फिर उसने कहा, अब मैं देखता हूँ कि चार पुरुष आग के बीच खुले हुए टहल रहे हैं, और उन को कुछ भी हानि नहीं पहुंची; और चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश्य है॥
- 26 फिर नबूकदनेस्सर उस धधकते हुए भट्टे के द्वार के पास जा कर कहने लगा, हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, हे परमप्रधान परमेश्वर के दासो, निकल कर यहां आओ! यह सुन कर शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग के बीच से निकल आए।

- 28 नबूकदनेस्सर कहने लगा, धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने अपना दूत भेज कर अपने इन दासों को इसलिये बचाया, क्योंकि इन्होंने राजा की आज्ञा न मान कर, उसी पर भरोसा रखा, और यह सोच कर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़, किसी देवता की उपासना वा दण्डवत न करेंगे।
- 29 इसलिये अब मैं यह आज्ञा देता हूँ कि देश-देश और जाति-जाति के लोगों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों में से जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह टुकड़े टुकड़े किया जाएगा, और उसका घर घूरा बनाया जाएगा; क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके।

3. यूहन्ना 8 : 1, 2, 26-32

- 1 यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
- 2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
- 26 तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैं ने उस से सुना है, वही जगत से कहता हूँ।
- 27 वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है।
- 28 तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।
- 29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिस से वह प्रसन्न होता है।
- 30 वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया ॥
- 31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चले ठहरोगे।
- 32 और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा

4. याकूब 1 : 17, 18

- 17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।
- 18 उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उस की सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों ॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 7 : 13-21

विचारकों का समय आ गया है। सत्य, सिद्धांतों और समय-सम्मानित प्रणालियों से स्वतंत्र, मानवता के द्वार पर दस्तक देता है। अतीत के साथ संतोष और भौतिकवाद की ठंडी परम्परा के बीच टकराव कम हो रहा है। भगवान की अज्ञानता अब विश्वास के रास्ते का पत्थर नहीं है। आज्ञाकारिता का एकमात्र जमानता उसी की एक सही आशंका है जिसे जानने के लिए जीवन अनन्त है। यद्यपि साम्राज्य गिरते हैं, "प्रभु हमेशा के लिए शासन करेंगे।"

2. 224 : 28-4

सत्य स्वतंत्रता के तत्वों को लाता है। इसके बैनर पर आत्मा से प्रेरित आदर्श वाक्य है, "गुलामी को समाप्त कर दिया गया है।" भगवान की शक्ति कैद में उद्धार लाता है। कोई भी शक्ति दिव्य प्रेम का सामना नहीं कर सकती। यह कौन सी शक्ति है, जो स्वयं ईश्वर का विरोध करती है? यह किसके साथ आता है? वह कौन सी चीज है जो मनुष्य को पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए लोहे की छड़ से बांधती है? जो कुछ भी मनुष्य को गुलाम बनाता है वह ईश्वरीय सरकार का विरोध करता है। सत्य ही मनुष्य को मुक्त बनाता है।

3. 259 : 6-14

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

4. 286 : 1-15

मानव सिद्धांत में विश्वास के माध्यम से सत्य की तलाश करना अनंत को समझना नहीं है। हमें परिमित, पारस्परिक, और नश्वर के माध्यम से अपरिवर्तनीय और अमर की तलाश नहीं करनी चाहिए, और इसलिए प्रदर्शन के बजाय विश्वास पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि यह विज्ञान के ज्ञान के लिए घातक है। सत्य की समझ सत्य में पूर्ण विश्वास देती है, और आध्यात्मिक समझ सभी जले हुए प्रसादों से बेहतर है।

मास्टर ने कहा, "बिना मेरे द्वारा कोई पिता (होने का दिव्य सिद्धांत) के पास नहीं पहुंच सकता।" मसीह, जीवन, सत्य, प्रेम के बिना; क्योंकि मसीह कहता है: "मार्ग मैं हूँ." इस मूल पुरुष, यीशु द्वारा पहले से लेकर आखिर तक शारीरिक कार्य को अलग रखा गया था। वह जानता था कि दिव्य सिद्धांत, प्रेम, वास्तविक सब कुछ बनाता और संचालित करता है।

5. 161 : 5-10

पवित्र प्रेरणा ने मन की अवस्थाएँ पैदा की हैं जो आग की लपटों को कम करने में सक्षम हैं, जैसे बाइबिल में तीन युवा हिब्रू बंदियों को बेबीलोनियन भट्टी में डाला गया था; जबकि एक विपरीत मानसिक स्थिति सहज दहन उत्पन्न कर सकती है।

6. 243 : 4-9

दैवीय प्रेम, जिसने जहरीली सांप को हानिरहित बना दिया, जिसने उबलते हुए तेल से पुरुषों को ज्वलंत भट्टी से, शेर के जबड़े से, हर उम्र में बीमार और पाप और विजय से मृत्यु तक पहुंचाया। इसने नायाब शक्ति और प्रेम के साथ यीशु के प्रदर्शनों को ताज पहनाया।

7. 167 : 22-31

अड़ियल और आधे-अधूरे पद पर बैठना या आत्मा और भौतिक, सत्य और त्रुटि के साथ समान रूप से काम करने की अपेक्षा करना बुद्धिमानी नहीं है। एक तरीका है - ईश्वर और उसका विचार - जो आध्यात्मिक होने की ओर ले जाता है। शरीर की वैज्ञानिक सरकार को दिव्य मन के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए। शरीर पर किसी अन्य तरीके से नियंत्रण हासिल करना असंभव है। इस बुनियादी बिंदु पर, डरपोक रूढ़िवाद बिल्कुल बेवजह है। केवल सत्य पर कट्टरपंथी निर्भरता के माध्यम से वैज्ञानिक उपचार शक्ति का एहसास किया जा सकता है।

8. 495 : 6-13

यदि बीमारी सच है या सत्य का विचार है, तो आप बीमारी को नष्ट नहीं कर सकते हैं, और यह कोशिश करना बेतुका होगा। तब बीमारी और त्रुटि को वर्गीकृत करें जैसा कि हमारे मास्टर ने किया था, जब उन्होंने बीमारों की बात की थी, "जिसे शैतान ने बाध्य किया," और मानव विश्वास पर कार्य करने वाली सत्य की जीवन-शक्ति में त्रुटि के लिए एक संप्रभु मारक पाते हैं, एक शक्ति जो जेल के दरवाज़े को इस तरह से खोलती है, और बंदी को शारीरिक और नैतिक रूप से मुक्त करती है।

9. 227 : 14-29

मनुष्य के अधिकारों को त्यागकर, हम सभी उत्पीड़न के विनाश को दूर करने में विफल नहीं हो सकते। गुलामी मनुष्य की वैध स्थिति नहीं है। ईश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्र किया। पाल ने कहा, "मैं आज़ाद पैदा हुआ था।" सभी पुरुषों को स्वतंत्र होना चाहिए। "जहां कहीं प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतंत्रता है।" प्रेम और सत्य मुक्त करते हैं, लेकिन बुराई और त्रुटि पुरुषों को कैद में ले जाती है।

क्रिश्चियन साइंस स्वतंत्रता और रोग के मानक को बढ़ाता है: "मेरे पीछे आओ! बीमारी, पाप, और मृत्यु के बंधन से बचो! " यीशु ने रास्ता चिह्नित किया। दुनिया के नागरिक, "परमेश्वर के बच्चों की शानदार स्वतंत्रता" स्वीकार करें और मुक्त रहें! यह तुम्हारा दिव्य अधिकार है। भौतिक बोध का भ्रम, ईश्वरीय विधान नहीं, आपको बाध्य करता है, आपके मुक्त अंगों को उलझाता है, आपकी क्षमताओं को अपंग करता है, आपके शरीर को ऊर्जावान करता है, और आपके होने के टैबलेट को खराब कर देता है।

10. 368 : 2-9

विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है। दिव्य विज्ञान जोर देकर कहता है कि समय यह सब साबित करेगा। सत्य और त्रुटि दोनों नश्वरता की आशंका से पहले से कहीं अधिक निकट आ गए हैं, और सत्य अभी भी स्पष्ट हो जाएगा क्योंकि त्रुटि स्वयं नष्ट हो गई है।

11. 130 : 26-5

यदि ईश्वर या सत्य के वर्चस्व के लिए विज्ञान के मजबूत दावे पर विचार किया गया है, और अच्छाई के वर्चस्व पर संदेह किया गया है, क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि, दुष्टतापूर्ण, बुराई के जोरदार दावों पर चकित होना और उन पर संदेह करना, और अब उसे त्यागने के लिए पाप और अप्राकृतिक प्रेम करना स्वाभाविक नहीं लगता, - अब बुराई की कभी भी कल्पना करना अच्छा नहीं है और वर्तमान अच्छा है? सत्य को त्रुटि के रूप में इतना आश्चर्यजनक और अप्राकृतिक नहीं होना चाहिए, और त्रुटि को सत्य के रूप में वास्तविक नहीं होना चाहिए। स्वास्थ्य के रूप में बीमारी इतनी वास्तविक नहीं लगनी चाहिए। विज्ञान में कोई त्रुटि नहीं है, और हमारे जीवन को सभी के दैवीय सिद्धांत भगवान के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए वास्तविकता से शासित होना चाहिए।

12. 228 : 11-15

मनुष्य की दासता वैध नहीं है। जब मनुष्य अपनी स्वतंत्रता की विरासत में प्रवेश करेगा, तो उसका ईश्वर प्रदत्त भौतिक इंद्रियों पर आधिपत्य हो जाएगा। नश्वर किसी दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर अपनी स्वतंत्रता का दावा करेंगे।

13. 288 : 31-1

शाश्वत सत्य को नष्ट कर देता है जो लगता है कि मनुष्यों ने त्रुटि से सीखा है, और भगवान के बच्चे के रूप में मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व प्रकाश में आता है।

14. 380 : 4 केवल

सत्य हमेशा विजयी होता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6